अध्ययन सामग्री

बी.ए. पार्ट 3

प्रश्नपत्र – पञ्चम

डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग
एच.डी. जैन कॉलेज
वी.कुं.सिं. वि०, आरा

18.07.20

ऋग्वेद का प्रतिपाद्य विषय / विषय-वस्तु

अखिल भूमण्डल पर भारत की भव्यभूमि दीव्यतम स्थान पर सुप्रतिष्ठित है। देवता भी इस पावन धरा की प्रशंसा करते हैं। साथ ही इस पर पुरुष रूप में जन्म लेने की आकांक्षा रखते हैं –

'गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥'
(विष्णुपुराण)

अब यहाँ प्रश्न उठता है कि भारत भू की उत्कृष्टता का कारण क्या है? कारण द्रष्टव्य है – जब सम्पूर्ण जगत् अज्ञान के अन्धकार से आवृत्त था तब ज्ञान गंगा का प्रथम स्रोत भारत में ही प्रभावित हुआ था जो कि 'वेद' इस ज्ञान रूप संज्ञा को प्राप्त हुआ। सम्प्रति वेद के सम्बन्ध में कथन है –

"योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥"

वेदों में सर्वप्राचीन ऋग्वेद है। वेद कहने से भी ऋग्वेद का बोध होता है। ऋग्वेद के दो प्रकार के विभाग उपलब्ध होते हैं – अष्टक क्रम, मण्डल क्रम।

अष्टक क्रमानुसार ऋग्वेद की सम्पूर्ण ऋचाओं को 8 अष्टक, 64 अध्याय तथा 2006 वर्गों में तथा मण्डल क्रमानुसार 10 मण्डल, 85 अनुवाक, 1028 सूक्त तथा 10580¼ ऋचाओं में विभक्त किया गया है। दूसरा विभाग अधिक महत्त्वशाली, ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक माना गया है। 10 मण्डलों में विभक्त होने के कारण ऋग्वेद 'दशतयी' के नाम से निरुक्तादि ग्रन्थों में प्रसिद्ध है। ऋग्वेद में 11 सूक्त 'बालखिल्य' के नाम से विख्यात हैं। 'खिल' का शब्दार्थ है - परिशिष्ट या पीछे जोड़े गए मन्त्र। ऋग्वेद की ऋचाओं में शब्दों की संख्या 1 लाख 53 हजार 8 सौ 26 तथा शब्दों के अक्षरों की संख्या चार लाख 32 हजार है अर्थात् मोटे तौर पर प्रत्येक मन्त्र में 15 शब्द हैं और प्रत्येक शब्द में तीन अक्षर पाये जाते हैं। ऋग्वेद के शब्द, अक्षर आदि के गणना में कहीं-कहीं पार्थक्य दृष्टिगोचर होता है।

सम्प्रति प्रस्तुत है ऋग्वेद का प्रतिपाद्य विषय- यास्क ने ऋग्वेद संहिता की समस्त ऋचाओं को तीन वर्गों में बाँटा है -

1) प्रत्यक्षकृत 2) परोक्षकृत 3) आध्यात्मिक

इन्हीं तीन वर्गों को दृष्टि में रखते हुए 'आते' महोदय ने भी ऋग्वेद के समस्त सूक्तों की तीन कोटियाँ निर्धारित की है —

1) धार्मिक सूक्त 2) दार्शनिक सूक्त 3) धर्मनिरपेक्ष सूक्त

1) काव्यात्मक स्तुतियाँ एवं प्रार्थनाएँ —

ऋग्वेद के अधिकांश सूक्त स्तुतिपरक हैं। स्तुतियों के साथ ही ऋग्वेद में प्रार्थनाएँ भी हैं। ऋग्वेद का ऋषि जब किसी देवता की स्तुति करता है तो सूक्त के अन्तिम भाग में वह देवता से गायों, अश्वों, वीरपुत्रों और अन्नादि वस्तुओं को देने की प्रार्थना भी करता है। यथा -

"अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवेदिवे ।
यशसं वीरवत्तमम् ॥

सूर्य, पर्जन्य, मरुत्, उषा से संबंधित स्तुतियाँ सर्वाधिक काव्यात्मक बन पड़ी है । काव्यत्व की दृष्टि से सूक्त सर्वोत्कृष्ट है । देवियों में उषा का स्थान अग्रगण्य है और सबसे अधिक कवित्व मण्डित प्रतिभाशाली सौन्दर्याभिव्यञ्जक ऋचाएँ उषा देवी के विषय में है।

2) आख्यान सूक्त या संवाद सूक्त — ऋग्वेद में लगभग 20 सूक्त ऐसे हैं जो काव्यत्व एवं नाटकत्व के बहुत समीप हैं। ऐसे सूक्तों में कथनोपकथन का प्राधान्य है इसीलिए इन्हें संवाद सूक्तों की संज्ञा प्रदान की गई है । इन सूक्तों में कुछ प्राचीन कथाओं को संवादों में प्रस्तुत किया गया है । इनके स्वरूप के विषय में भिन्नी विद्वानों में गहरा मतभेद है। डॉक्टर ओल्डेनबर्ग की दृष्टि में ये प्राचीन आख्यानों के अवशिष्ट रूप हैं । डॉ० ओल्डेनबर्ग ने ऋग्वेदीय संवादसूक्तों को 'आख्यान' के नाम से अभिहित किया है । विण्टरनिट्ज इन्हें 'संवादसूक्त' कहते हैं । पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार बाद में विकसित नाटकों तथा महाकाव्यों के बीज इन्हीं संवाद-सूक्तों या आख्यान सूक्तों में निहित है । ये सूक्त प्रमुखतः दशम मण्डल में संकलित हैं ।

इन संवाद सूक्तों में तीन विशेष महत्वपूर्ण हैं —

1) पुरुरवा - उर्वशी - संवाद (ऋ० 10/85)
2) यमयमी संवाद (ऋ० 10/10)
3) सरमा पणि संवाद (ऋ० 10/130)

ये समग्र संवाद सूक्त नाटकीय ओजस्विता से ओत-प्रोत हैं और कलात्मक दृष्टि से नितान्त सुन्दर, सरस तथा भावोत्पादक हैं ।

3) दार्शनिक सूक्त या सृष्टि सूक्त — ऋग्वेद के लगभग 12 सूक्त ऐसे हैं जिनमें उपनिषदों में विकसित उच्चकोटि

के दार्शनिक विचारों के बीज मिलते हैं। इन सूक्तों में दशम मण्डल में आए पुरुष सूक्त, हिरण्यगर्भ सूक्त, नासदीय सूक्त तथा वाक् सूक्त का विशेष महत्त्व है। नासदीय सूक्त विज्ञ आलोचकों की दृष्टि में ऋग्वेदीय ऋषियों की अलौकिक दार्शनिक चिन्तनधारा का मौलिक परिचायक है।

4) तान्त्रिक सूक्त या ऐन्द्रजालिक सूक्त — संख्या में ऐसे सूक्त भी ऋग्वेद में 12 ही हैं। इनमें रोग भगाने के लिए, दरिद्रता दूर करने के लिए, शत्रु पर विजय पाने के लिए, कीट आदि हानिकारक जीवों एवं कुदृष्टि जैसी अपकारक शक्तियों को दूर करने के लिए मन्त्र-तन्त्र आदि दिए गए हैं। इनकी विषय-सामग्री अथर्ववेद से मिलती-जुलती है। 'विण्टरनिट्ज' के अनुसार ऋग्वेद का 'मण्डूक सूक्त' भी इसी कोटि का है।

5) अन्त्येष्टि सूक्त — ऋग्वेद में 5 अन्त्येष्टि सूक्त हैं। इन सूक्तों की विषय-वस्तु को देखने से ज्ञात होता है कि उस काल में भी शव को जलाया जाता था। दशम मण्डल में 16 वें सूक्त में शव के चिता पर रखे जाने के बाद प्रेत के यमलोक पहुँचने का वर्णन दर्शनीय है।

6) धर्मनिरपेक्ष या लौकिक सूक्त — ऋग्वेद में लगभग 20 सूक्त ऐसे हैं जिनमें सामाजिक रीति रिवाजों का संरक्षकों की उदारता का तथा जीवन में आनेवाली व्यावहारिक और नैतिक समस्याओं का उल्लेख है। इन सूक्तों में भी विवाह-सूक्त (10/85) का विशेष महत्त्व है।

7) दान स्तुतियाँ — 'विण्टरनिट्ज' के अनुसार ऋग्वेद में 40 ऐसे सूक्त हैं जिनमें पुरोहितों ने अपने यजमान की दान-शीलता की प्रशंसा की है। दशम मण्डल का एक सूक्त तो (10/117) पूर्ण अंशों में दान स्तुति ही है —

न स सखा यो न ददाति सख्ये सचाभुवे सचमानाय पित्वः।
अपास्मात् प्रेयान् न तदोको अस्ति पृणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत्॥

8) उपदेशात्मक सूक्त — ऋग्वेद में दो-चार ऐसे उपदेशात्मक सूक्त भी हैं जिनमें बाद में विकसित सूक्ति प्रधान काव्य के बीज दिखलाई पड़ते हैं।

9) श्रद्धा सूक्त - ऋग्वेद के दशम मण्डल का 151वाँ श्रद्धा-सूक्त है जिसमें श्रद्धा की स्तुति देवता के रूप में की गई है। इसमें मन्त्र तो केवल छह ही हैं किन्तु विषय की अपूर्वता के कारण यह स्वल्पकाय सूक्त विपुल महत्त्व से युक्त माना जाता है।

10) पुरुष सूक्त - दशम मण्डल में पुरुष सूक्त (10/90) अपनी दार्शनिकता, महनीयता, गम्भीरता तथा अन्तर्दृष्टि के लिए नितान्त विख्यात एवं अन्यतम है। इसमें पुरुष के आध्यात्मिक कल्पना का भव्य निदर्शन है। पुरुष के विषय में विलक्षण तथ्य यह है —

'पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भव्यम्' —

अकेले पुरुष ही यह समस्त विश्व है, जो प्राचीनकाल में उत्पन्न हुआ, जो आगे भविष्य में भी उत्पन्न होनेवाला है। यह सर्वेश्वरवाद का सिद्धान्त पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि में आर्यों के प्रौढ़ धार्मिक विकास का सूचक है तथा ऋग्वेदीय युग की अन्तिम प्रौढ़ दार्शनिक विचारधारा का परिचायक है। सृष्टि के उत्पादन में यज्ञ की कल्पना कितनी जागरूक तथा क्रियाशील होती थी, इसका परिचय इस सूक्त में उपलब्ध होता है। यह सूक्त वैदिक आर्यों की सामाजिक तथा आध्यात्मिक धारणाओं का परिचायक होने से नितान्त महत्त्वशाली है।

11) द्यूत सूक्त - ऋग्वेद के द्यूत सूक्त में जुआरी की मनोदशा का और साथ ही उसकी दुर्दशा का सुन्दर चित्रण

हुआ है। इस सूक्त से द्यूत क्रीड़ा की प्राचीनता भी सिद्ध होती है।

12) पहेलियाँ — ऋग्वेद में कुछ ऐसे सूक्त भी हैं जिनका सम्बन्ध वैदिक पहेलियों से जोड़ा जाता है।

इस प्रकार ऋग्वेद के प्रतिपाद्य विषय को देखने से स्पष्ट होता है कि उसमें विविध विषयों से संबंधित सूक्त हैं।